

भगवान आदिनाथ बाल पत्रिका

उम्र: 10-15 साल

भाषा: हिंदी

MANISH V. SHAH, Subhanpura, Vadodara. Mobile : 94299 26447 (WhatsApp)

अनुक्रमणिका

1. **अध्याय 1:** भगवान आदिनाथ: जीवन की मुख्य घटनाएँ
2. **अध्याय 2:** भगवान आदिनाथ के जीवन से महत्वपूर्ण सीख
3. **अध्याय 3:** भगवान आदिनाथ की शिक्षाएँ
4. **अध्याय 4:** अक्षय तृतीया: पहली आहार चर्या की अमर कहानी
5. **अध्याय 5:** आओ जानें कितना सीखा! (प्रश्नोत्तरी)
6. **अध्याय 6:** शब्द खोज
7. **अध्याय 7:** गणित प्रश्नोत्तरी
8. **अध्याय 8:** कहानी: सच्ची मदद (चित्रकथा शैली)
9. **अध्याय 9:** कविता: सीखें आदिनाथ से
10. **अध्याय 10:** कविता: आदिनाथ भगवान
11. **अध्याय 11:** भगवान आदिनाथ के पूर्व भव: तीर्थकर बनने की यात्रा

अध्याय 1: भगवान आदिनाथ: जीवन की मुख्य घटनाएँ



प्यारे बच्चों, क्या आप जानते हैं कि इस अनंत कालचक्र में, इस वर्तमान युग (अवसर्पिणी काल) के हमारे सबसे पहले तीर्थंकर कौन थे? वे थे भगवान ऋषभदेव, जिन्हें हम सब बहुत आदर और प्यार से आदिनाथ भगवान भी कहते हैं। 'आदि' का मतलब ही होता है - पहला या शुरुआत करने वाला। वे न केवल पहले तीर्थंकर थे, जिन्होंने हमें मोक्ष का रास्ता दिखाया, बल्कि वे मानवता को सभ्य तरीके से जीने की कला सिखाने वाले भी पहले महापुरुष थे।

*** **जन्म:**** उनका जन्म पवित्र नगरी अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश के राजा नाभिराय और महारानी मरुदेवी के घर हुआ था। उनके जन्म के समय चारों ओर अद्भुत प्रकाश फैल गया और पूरी नगरी में खुशियों और उत्सव का माहौल बन गया, मानो स्वयं स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

*** **युग का परिवर्तन:**** उनके समय में धीरे-धीरे प्रकृति में बदलाव आने लगा। पहले 'कल्पवृक्ष' हुआ करते थे, जो लोगों की सभी जरूरतें पूरी कर देते थे। लेकिन अब उनसे मिलने वाली चीजें कम होने लगीं। लोगों को भोजन, वस्त्र और आवास के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था।

*** **जीवन कला के दाता:**** तब दूरदर्शी राजकुमार ऋषभदेव ने लोगों की पीड़ा समझी। उन्होंने स्वयं चिंतन करके और फिर सबको सिखाकर समाज को एक नई दिशा दी। उन्होंने खेती करना (कृषि) सिखाया ताकि अनाज उगा सकें, लिखना-पढ़ना (मसि) सिखाया ताकि ज्ञान का आदान-प्रदान हो, आत्मरक्षा और समाज की रक्षा के लिए शस्त्र चलाना (असि) सिखाया, और साथ ही बर्तन बनाना, कपड़े बुनना, घर बनाना (शिल्प) और व्यापार (वाणिज्य) जैसी 72 कलाएं सिखाईं। इस प्रकार उन्होंने अव्यवस्थित जीवन जी रहे लोगों को एक सुसंस्कृत और व्यवस्थित समाज में जीना सिखाया।



* **विवाह और परिवार:** उनका विवाह यशस्वती (जिन्हें सुमंगला भी कहा जाता है) और सुनंदा से हुआ। महारानी यशस्वती से उनके 100 पुत्र हुए, जिनमें भरत चक्रवर्ती सबसे बड़े थे, और ब्राह्मी नाम की पुत्री हुई। महारानी सुनंदा से बाहुबली नाम के अत्यंत बलशाली पुत्र और सुंदरी नाम की पुत्री का जन्म हुआ। उनके पुत्र भरत इतने प्रतापी हुए कि उन्हीं के नाम पर हमारे देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा। राजकुमारी ब्राह्मी ने 'ब्राह्मी लिपि' का आविष्कार किया, जिससे लिखने की शुरुआत हुई, और राजकुमारी सुंदरी ने 'अंकगणित' का ज्ञान लोगों को दिया।

* **वैराग्य और दीक्षा:** वे लंबे समय तक कुशलतापूर्वक राज करते रहे। पर एक दिन राजसभा में नीलांजना नाम की देवलोक की नर्तकी नृत्य कर रही थी। नृत्य करते-करते अचानक आयु पूरी होने पर उसकी मृत्यु हो गई। इस क्षणभंगुर जीवन की सच्चाई देखकर भगवान ऋषभदेव के मन में संसार के प्रति गहरी उदासीनता और वैराग्य का भाव जाग उठा। उन्होंने तुरंत राजपाट त्यागने का निश्चय किया। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्रों में बाँट दिया (अयोध्या भरत को और तक्षशिला बाहुबली को) और स्वयं आत्म-कल्याण के मार्ग पर चलने के लिए जैन दीक्षा ग्रहण कर ली। उनके साथ लगभग 4000 अन्य राजाओं और लोगों ने भी दीक्षा ली।

* **पहली पारणा (आहार ग्रहण):** दीक्षा लेने के बाद भगवान आदिनाथ गहन तपस्या और ध्यान में लीन हो गए। उन्होंने एक वर्ष तक मौन धारण रखा और भोजन-पानी ग्रहण नहीं किया। उस समय लोगों को यह ज्ञान नहीं था कि तपस्वी मुनि को किस प्रकार भोजन दिया जाता है (आहार चर्या विधि)। वे सोचते थे कि हमारे पूर्व राजा को क्या चाहिए होगा, और वे उन्हें हाथी, घोड़े, रत्न, आभूषण आदि भेंट करने लगते थे, जिन्हें भगवान स्वीकार नहीं करते थे। इस प्रकार बिना आहार के लगभग 400 दिन (13 महीने और 9 दिन) बीत गए। अंत में, जब वे विहार करते हुए हस्तिनापुर पहुँचे, तो वहाँ उनके प्रपौत्र (भरत के पुत्र) श्रेयांस कुमार को अपने पूर्व जन्मों का स्मरण (जातिस्मरण ज्ञान) हुआ। उन्हें याद आया कि मुनियों को शुद्ध और सात्विक भोजन की आवश्यकता होती है। तब उन्होंने भक्तिपूर्वक भगवान आदिनाथ को गन्ने के रस का आहार दिया, जिसे भगवान ने अपनी अंजुली में ग्रहण किया। इस प्रकार भगवान की पहली पारणा हुई। इसी महान घटना की याद में आज भी 'अक्षय तृतीया' का पर्व मनाया जाता है और लोग 'वर्षी तप' की पारणा गन्ने के रस से करते हैं।

* **केवलज्ञान:** एक हजार वर्षों तक कठोर तपस्या और ध्यान करने के बाद, फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि को, प्रयाग के पास पुरिमताल नगर के शकटमुख उद्यान में वटवृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए, उन्हें 'केवलज्ञान' यानी सम्पूर्ण और अनंत ज्ञान की प्राप्ति हुई। अब वे सबकुछ जानने और देखने वाले सर्वज्ञ बन गए थे।

* **धर्म तीर्थ की स्थापना:** केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद, भगवान ने संसार के जीवों को दुःख से मुक्ति का मार्ग बताने के लिए धर्मोपदेश देना शुरू किया। उन्होंने साधु, साध्वी, श्रावक (गृहस्थ पुरुष) और श्राविका (गृहस्थ महिला) रूपी चतुर्विध तीर्थ (संघ) की स्थापना की। यह संघ आज भी जैन धर्म की ध्वजा फहरा रहा है।

* **निर्वाण (मोक्ष):** अंत में, अपनी आयु पूर्ण होने पर, भगवान आदिनाथ ने कैलाश पर्वत (जिसे अष्टापद

भी कहते हैं) पर योग निरोध करके माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन सभी कर्मों का नाश कर शाश्वत सुखमय अवस्था, यानी मोक्ष को प्राप्त किया। वे जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो गए।

अध्याय 2: भगवान आदिनाथ के जीवन से महत्वपूर्ण सीख

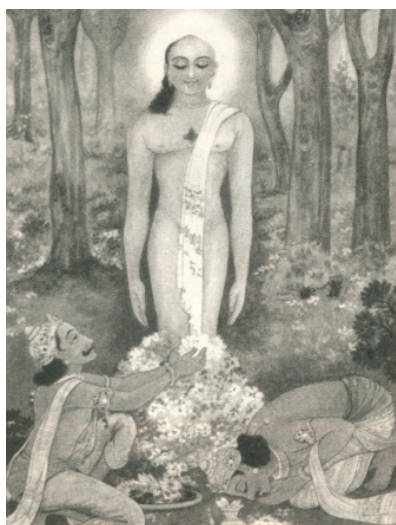


भगवान आदिनाथ का प्रेरणादायक जीवन हमें सुखी और सार्थक जीवन जीने के लिए कई महत्वपूर्ण बातें सिखाता है:

1. ****अहिंसा:**** यह सबसे बड़ा धर्म है। इसका अर्थ है - किसी भी छोटे या बड़े जीव को मन से (बुरा सोचना), वचन से (कठोर या झूठा बोलना) या शरीर से (मारना या कष्ट देना) दुःख न पहुँचाना। जैसे, हमें जानवरों को परेशान नहीं करना चाहिए, कीड़े-मकोड़ों को बेवजह नहीं मारना चाहिए और अपने दोस्तों या भाई-बहनों से भी लड़ाई-झगड़ा या उन्हें चिढ़ाना नहीं चाहिए।
2. ****सत्य:**** हमेशा सच बोलना, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो। झूठ बोलने से विश्वास टूटता है और आत्मा मलिन होती है।
3. ****अचौर्य (अस्तेय):**** किसी की गिरी हुई, भूली हुई या बिना दी हुई कोई भी वस्तु न लेना। यह ईमानदारी का प्रतीक है। स्कूल में किसी और की पेंसिल या रबर बिना पूछे लेना भी अचौर्य व्रत का उल्लंघन है।
4. ****ब्रह्मचर्य:**** अपनी इंद्रियों, विशेषकर मन को वश में रखना और व्यर्थ के भोग-विलास से दूर रहना। विद्यार्थियों के लिए इसका अर्थ है अपना ध्यान पढ़ाई और अच्छे कामों में लगाना।
5. ****अपरिग्रह:**** जरूरत से ज्यादा चीजों का संग्रह (इकट्ठा) न करना। अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना और सादा जीवन जीना। जैसे, अगर हमारे पास खेलने के लिए काफी खिलौने हैं, तो और नए खिलौनों की जिद न करना या अपने पुराने कपड़े या किताबें जरूरतमंदों को देना अपरिग्रह का पालन है।

6. ****करुणा:**** सभी प्राणियों, चाहे वे मनुष्य हों, पशु-पक्षी हों या पेड़-पौधे, सबके प्रति दया और प्रेम का भाव रखना। दूसरों के दुःख को समझना और उनकी मदद करने की कोशिश करना।
7. ****ज्ञान का महत्व:**** भगवान ने स्वयं कठोर तप से केवलज्ञान प्राप्त किया और सबको ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। ज्ञान ही अज्ञान के अंधकार को मिटाकर सही रास्ता दिखाता है। उनकी पुत्रियों ब्राह्मी (लिपि) और सुंदरी (गणित) ने ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमें भी खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए।
8. ****पुरुषार्थ (प्रयास):**** उन्होंने लोगों को भाग्य के भरोसे बैठे रहने के बजाय आलस्य छोड़कर मेहनत और उद्यम करना सिखाया (जैसे खेती, शिल्प, व्यापार आदि)। जीवन में सफलता पाने के लिए सही दिशा में प्रयास करना बहुत जरूरी है।
9. ****समभाव:**** जीवन में आने वाले सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान, सफलता-असफलता जैसी सभी परिस्थितियों में शांत और स्थिर रहना, विचलित न होना। यह मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

अध्याय 3: भगवान आदिनाथ की शिक्षाएँ



भगवान आदिनाथ ने केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद समवशरण (विशेष धर्मसभा) में सभी प्राणियों को सुखी जीवन जीने और आत्मा का परम कल्याण यानी मोक्ष प्राप्त करने का अनमोल मार्ग बताया। उनकी मुख्य शिक्षाएँ इस प्रकार हैं:

*** **आत्म-कल्याण का सच्चा मार्ग:**** उन्होंने समझाया कि दुनिया की बाहरी चीजों, जैसे धन-दौलत, पद या भौतिक सुखों में स्थायी खुशी नहीं है। सच्चा और अनंत सुख तो अपनी आत्मा को पहचानने, उसे शुद्ध बनाने और जन्म-मरण के बंधन (कर्मों) से मुक्त होने में ही है।

* **कर्म सिद्धांत:** यह दुनिया कर्म के नियम पर चलती है। हम जैसे विचार रखते हैं, जैसे वचन बोलते हैं और जैसे काम करते हैं, वैसे ही कर्म हमारी आत्मा से बंधते हैं। अच्छे (पुण्य) कर्मों का फल सुखद होता है और बुरे (पाप) कर्मों का फल दुखद होता है। इन कर्मों के फल हमें इस जन्म में या अगले जन्मों में भोगने पड़ते हैं। कर्मों को अपनी आत्मा से पूरी तरह हटाकर ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

* **मोक्ष मार्ग: त्रिरत्न:** कर्मों से मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र रास्ता 'त्रिरत्न' यानी तीन रत्नों का पालन करना है:

* **सम्यक् दर्शन:** देव, शास्त्र, गुरु पर सच्ची श्रद्धा रखना और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को मानना।

* **सम्यक् ज्ञान:** जीव, अजीव, कर्म आदि तत्वों का सही और शंका रहित ज्ञान प्राप्त करना।

* **सम्यक् चारित्र्य:** ज्ञान के अनुसार सही आचरण करना, यानी व्रत, नियम, तप आदि का पालन करना और हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों से बचना।

* **समाज व्यवस्था और जीवन निर्वाह:** जब कल्पवृक्ष समाप्त होने लगे, तब भगवान ने ही लोगों को समाज बनाकर रहना और जीवन चलाने के लिए आवश्यक छह कर्म (षट्कर्म) सिखाए: 'असि' (रक्षा करना), 'मसि' (लिखना-पढ़ना, हिसाब रखना), 'कृषि' (खेती करना), 'विद्या' (ज्ञान-विज्ञान सीखना), 'शिल्प' (कला और कारीगरी) और 'वाणिज्य' (व्यापार करना)। इन्हीं से मानव सभ्यता का विकास हुआ।

* **चतुर्विध संघ की स्थापना:** धर्म के मार्ग पर चलने और उसे आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने चार प्रकार के संघ की स्थापना की:

* **साधु:** घर-परिवार और सांसारिक मोह त्यागकर कठोर व्रतों का पालन करने वाले पुरुष।

* **साध्वी:** घर-परिवार त्यागकर व्रतों का पालन करने वाली महिलाएं।

* **श्रावक:** गृहस्थ जीवन में रहते हुए धर्म का पालन करने वाले पुरुष।

* **श्राविका:** गृहस्थ जीवन में रहते हुए धर्म का पालन करने वाली महिलाएं।

यह चतुर्विध संघ आज भी जैन धर्म का आधार है और हमें सत्य, अहिंसा और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

अध्याय 4: अक्षय तृतीया: पहली आहार चर्या की अमर कहानी



प्यारे बच्चों, क्या तुमने कभी सोचा है कि साधु-संत भोजन कैसे करते हैं? वे अपना भोजन स्वयं नहीं बनाते। वे गृहस्थों (घर में रहने वाले लोगों) के यहाँ जाकर शुद्ध और सात्विक भोजन मांगते हैं, जिसे 'गोचरी' या 'आहार' लेना कहते हैं। लेकिन यह परंपरा शुरू कैसे हुई? इसकी कहानी जुड़ी है भगवान आदिनाथ और अक्षय तृतीया के दिन से।

****दीक्षा के बाद का कठिन समय:****

जैसा कि हमने पढ़ा, भगवान ऋषभदेव ने राजपाट त्यागकर दीक्षा ले ली। उनके साथ कई और लोगों ने भी दीक्षा ली। दीक्षा के बाद भगवान गहन ध्यान और तपस्या में लीन हो गए। उन्होंने एक वर्ष तक पूर्ण मौन रखा और कोई आहार (भोजन-पानी) ग्रहण नहीं किया। वे गाँव-गाँव, नगर-नगर विहार करते रहे।

****लोगों का अज्ञान:****

उस समय लोग मुनियों की चर्या (जीवन शैली) और उन्हें आहार देने की विधि भूल चुके थे। जब भगवान ऋषभदेव भिक्षा के लिए किसी घर के सामने खड़े होते, तो लोग उन्हें पहचान तो लेते कि ये हमारे पूर्व राजा हैं, पर उन्हें समझ नहीं आता था कि इन्हें क्या चाहिए। वे सोचते कि शायद राजा को अपने राज्य की याद आ रही है या उन्हें कुछ कीमती वस्तुएँ चाहिए। इसलिए लोग उन्हें सोना, चाँदी, हीरे-मोती, रत्न, सुंदर वस्त्र, हाथी, घोड़े, यहाँ तक कि अपनी कन्याएँ भी भेंट करने लगते थे! भगवान तो वीतरागी थे, उन्हें इन सांसारिक वस्तुओं से क्या लेना-देना? वे मौन रहते और बिना कुछ लिए आगे बढ़ जाते।

****एक वर्ष का लंबा उपवास:****

इस तरह पूरा एक वर्ष (399 दिन) बीत गया! भगवान बिना अन्न-जल के तपस्या करते रहे। उनके शरीर का तेज तो बढ़ रहा था, पर वे शारीरिक रूप से बहुत कृश (कमजोर) हो गए थे। उनके साथ दीक्षा लेने वाले कई मुनि भूख-प्यास सहन न कर सके और मार्ग से भटक गए।

****हस्तिनापुर में आगमन:****

विहार करते-करते भगवान हस्तिनापुर पहुँचे। उस समय वहाँ राजा सोमप्रभ राज करते थे, जो भगवान ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली के पुत्र थे। राजा सोमप्रभ के पुत्र का नाम था श्रेयांस कुमार।

****श्रेयांस कुमार का जातिस्मरण ज्ञान:****

जब भगवान ऋषभदेव हस्तिनापुर में आहार के लिए पधारे, तो राजकुमार श्रेयांस कुमार अपने महल की खिड़की से उन्हें देख रहे थे। भगवान को देखते ही श्रेयांस कुमार को अपार भक्ति उमड़ी और उन्हें अपने पूर्व जन्मों का स्मरण हो आया (जातिस्मरण ज्ञान)। उन्हें याद आया कि पिछले जन्मों में उन्होंने मुनियों को किस प्रकार शुद्ध और निर्दोष आहार दान दिया था। वे तुरंत समझ गए कि भगवान को इस समय किसी राजसी भेंट की नहीं, बल्कि शरीर टिकाने के लिए शुद्ध भोजन की आवश्यकता है।

****पहली पारणा: गन्ने का रस:****

उसी समय श्रेयांस कुमार के आँगन में किसानों ने ताजा गन्ने पेरकर उनका रस निकाला था और बड़े-बड़े पात्रों में भरकर रखा था। श्रेयांस कुमार दौड़कर नीचे आए, शुद्ध वस्त्र पहने और अत्यंत भक्ति भाव से उन रस के पात्रों को लेकर भगवान के सामने पहुँचे। उन्होंने विधिपूर्वक (नवधा भक्ति से) भगवान से प्रार्थना की, "हे स्वामी! यह इक्षुरस (गन्ने का रस) शुद्ध और प्रासुक (निर्जीव) है, कृपया इसे ग्रहण कर मुझ पर कृपा करें।"

भगवान ऋषभदेव ने देखा कि यह बालक आहार दान की सही विधि जानता है और दिया जाने वाला रस भी शुद्ध है। तब उन्होंने अपनी दोनों हथेलियों की अंजुली बनाकर श्रेयांस कुमार द्वारा दिया गया गन्ने का रस ग्रहण किया।

****अक्षय तृतीया का महत्व:****

लगभग 400 दिनों (एक वर्ष, तेरह महीने और नौ दिन के बाद) की कठोर तपस्या के बाद यह भगवान की पहली पारणा थी। जिस दिन यह ऐतिहासिक घटना हुई, वह दिन था वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि। भगवान के पारणे से श्रेयांस कुमार को महान पुण्य का बंध हुआ और उनके घर धन-धान्य की वर्षा होने लगी। आकाश से देवों ने भी जय-जयकार की, पुष्प बरसाए और इस दान की महिमा गाई। उन्होंने कहा, "अहो दानं, अहो दानं! यह दान अक्षय है, इसका पुण्य कभी क्षय (नष्ट) नहीं होगा।"

तभी से यह दिन ****'अक्षय तृतीया'*** के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसी दिन से मुनियों को आहार देने की विधि (आहार चर्या) फिर से शुरू हुई। आज भी जैन धर्म में अक्षय तृतीया का बड़ा महत्व है। लोग इस दिन दान-पुण्य करते हैं और जो लोग 'वर्षी तप' (एक दिन उपवास, एक दिन भोजन) करते हैं, वे इसी दिन गन्ने के रस से अपनी तपस्या का पारणा करते हैं।

यह कहानी हमें सिखाती है कि सही ज्ञान, विवेक और शुद्ध भाव से किया गया दान कितना महत्वपूर्ण और पुण्यदायी होता है।

अध्याय 5: आओ जानें कितना सीखा! (प्रश्नोत्तरी)
सही उत्तर चुनो:

1. भगवान आदिनाथ के पिता का नाम क्या था?
(क) भरत
(ख) नाभिराय
(ग) बाहुबली
2. भगवान आदिनाथ का जन्म कहाँ हुआ था?
(क) हस्तिनापुर
(ख) अयोध्या
(ग) कैलाश पर्वत
3. भगवान आदिनाथ ने लोगों को कौन सी कला सिखाई?
(क) केवल नृत्य
(ख) केवल गायन
(ग) कृषि, मसि, असि आदि षट्कर्म
4. भगवान आदिनाथ की पहली पारणा (आहार) किसने करवाई थी?
(क) राजा भरत
(ख) श्रेयांस कुमार
(ग) राजा नाभिराय
5. भगवान आदिनाथ को केवलज्ञान कहाँ प्राप्त हुआ?
(क) अयोध्या में वटवृक्ष के नीचे
(ख) हस्तिनापुर में गन्ने के खेत में
(ग) प्रयाग के पास पुरिमताल नगर के शकटमुख उद्यान में वटवृक्ष के नीचे
6. मोक्ष मार्ग के त्रिरत्न कौन से हैं?
(क) दान, शील, तप
(ख) सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र
(ग) अहिंसा, सत्य, अचौर्य
7. अक्षय तृतीया के दिन भगवान आदिनाथ ने किस चीज़ से पारणा किया था?
(क) खीर से
(ख) गन्ने के रस से
(ग) फलों से

(उत्तर: 1. (ख), 2. (ख), 3. (ग), 4. (ख), 5. (ग), 6. (ख), 7. (ख))

अध्याय 6: शब्द खोज

नीचे दिए गए शब्दों को वर्ग पहेली में ढूंढो और उन पर गोला लगाओ:

- * आदिनाथ
- * ऋषभ
- * मरुदेवी
- * नाभि
- * अयोध्या
- * भरत
- * बाहुबली
- * ब्राह्मी
- * अहिंसा
- * केवलज्ञान
- * कैलाश
- * श्रेयांस
- * सुनंदा
- * सुंदरी
- * अक्षय
- * तृतीया
- * इक्षुरस

सु नं दा र त कै ला श म क्ष
हिं क्ष ना म रु दे वी हं य
सा क भि कि रि बा हु ब ली तृ
रि ब रा ह्मी ज आ न च र ती
ष य श्रे यां स क म प त या
भ ल ज्ञा न प व र त र य क
व आ दि ना थ न र म णो शु
क म ल प ट क क्ष य त ध्या र
सुं द री ल क म य ना भि स
इ क्षु र स भ र त व म क ल

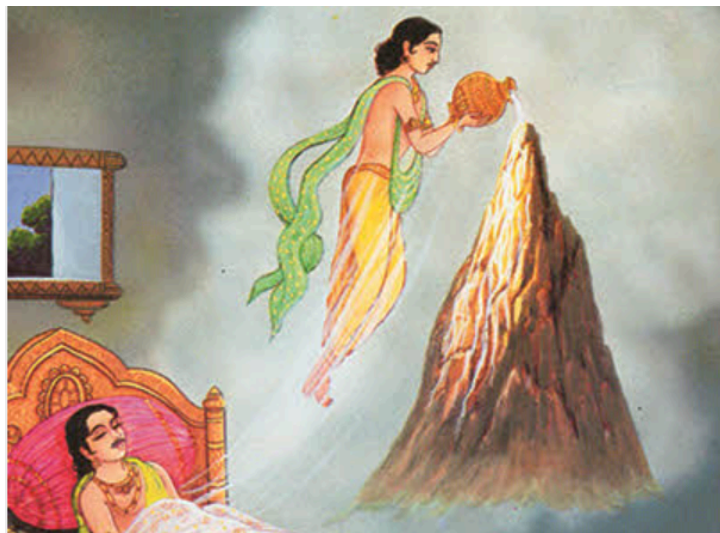
अध्याय 7: गणित प्रश्नोत्तरी

चलो, कुछ गणित के सवाल हल करें!

1. भगवान आदिनाथ के महारानी यशस्वती से कितने पुत्र थे? (संकेत: अध्याय 1 देखो)
2. भगवान आदिनाथ की दीक्षा के बाद लगभग कितने दिनों तक निराहार तपस्या चली? (संकेत: अध्याय 4 देखो)
3. यदि भगवान आदिनाथ की दो पुत्रियाँ (ब्राह्मी और सुंदरी) और 100 पुत्र थे, तो उनकी कुल कितनी संतानें थीं?
4. अगर श्रेयांस कुमार ने भगवान को पारणा कराने के लिए 5 अंजुली (मान लो हर अंजुली में 150 मिलीलीटर) गन्ने का रस दिया, तो कुल कितना रस दिया?
5. भगवान ने 1000 वर्ष तपस्या की। एक वर्ष में 365 दिन होते हैं (लगभग)। तो उन्होंने कुल कितने दिन तपस्या की?

(उत्तर: 1. 100, 2. 400 (लगभग), 3. 102, 4. 750 मिलीलीटर, 5. 365,000 दिन)

अध्याय 8: कहानी: सच्ची मदद (चित्रकथा शैली)



****पैनल 1:****

****दृश्य:**** तपस्या में लीन भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) शांत भाव से वन में विचरण कर रहे हैं। उनका शरीर तप के कारण कृश हो गया है, पर मुख पर अद्भुत तेज है।

****टेक्स्ट:**** दीक्षा लेने के बाद भगवान ऋषभदेव कठोर तपस्या कर रहे थे। उन्हें आहार लिए बिना लगभग 400 दिन बीत गए थे, फिर भी वे आत्म-ध्यान में स्थिर थे।

****पैनल 2:****

****दृश्य:**** भगवान हस्तिनापुर नगर के पास पहुँचते हैं। लोग उन्हें देखकर पहचान जाते हैं और आश्चर्यचकित होते हैं। वे समझ नहीं पा रहे कि अपने पूर्व राजा और अब मुनि को क्या भेंट दें। कुछ लोग सोना, चाँदी, हीरे, घोड़े आदि लेकर आते हैं।

****टेक्स्ट:**** लोग अपने प्रिय पूर्व राजा को पहचान तो गए, पर मुनि को क्या देना चाहिए, यह विधि वे भूल चुके थे। अज्ञानतावश वे उन्हें कीमती वस्तुएँ और राजसी सामग्री भेंट करने लगे, जिन्हें भगवान मौनपूर्वक अस्वीकार कर देते।

****पैनल 3:****

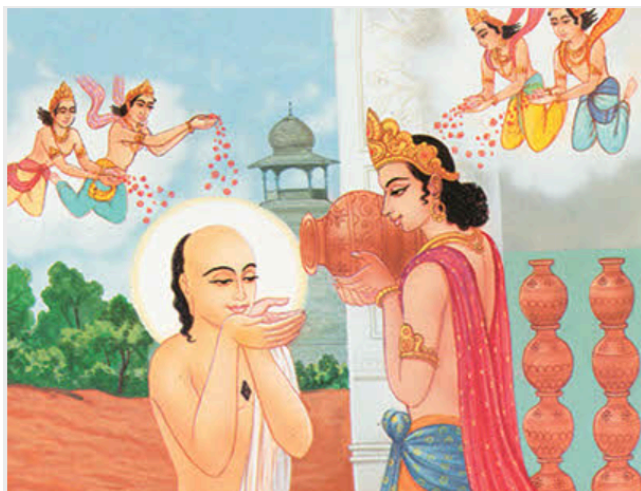
****दृश्य:**** महल की ऊपरी खिड़की से राजकुमार श्रेयांस कुमार भगवान को देखते हैं। उन्हें देखते ही अपार भक्ति उमड़ती है और उन्हें अपने पूर्व भव का ज्ञान (जातिस्मरण ज्ञान) हो जाता है।

****टेक्स्ट:**** श्रेयांस कुमार को तुरंत याद आया कि पिछले जन्मों में भी उन्होंने मुनियों को किस प्रकार शुद्ध भोजन का दान दिया था। वे समझ गए कि भगवान को इस समय भोजन (आहार) की आवश्यकता है, न कि इन सांसारिक वस्तुओं की।

****पैनल 4:****

****दृश्य:**** श्रेयांस कुमार तेजी से दौड़कर नीचे आते हैं। उनके सेवकों ने ताज़ा गन्ने पेरकर रस निकाला है। वे स्वयं उस शुद्ध गन्ने के रस से भरा पात्र लेकर भगवान के सम्मुख आते हैं और अत्यंत भक्ति भाव से नवधा भक्ति पूर्वक आहार ग्रहण करने की विनती करते हैं।

****टेक्स्ट:**** श्रेयांस कुमार ने आदरपूर्वक भगवान को इक्षुरस (गन्ने का रस) ग्रहण करने की विनती की। उनकी आँखों में श्रद्धा और भक्ति के आँसू थे।



****पैनल 5:****

****दृश्य:**** भगवान ऋषभदेव अपनी अंजुली बनाकर शांत भाव से गन्ने का रस ग्रहण कर रहे हैं। श्रेयांस कुमार कृतज्ञता से झुके हुए हैं। आकाश से देव फूल बरसा रहे हैं और 'अहो दानं, अहो दानं' की ध्वनि कर रहे हैं।

****टेक्स्ट:**** भगवान ने श्रेयांस कुमार का शुद्ध और विधिपूर्वक दिया गया आहार ग्रहण कर अपनी लंबी तपस्या का पारणा किया। देवों ने जय-जयकार की और पांच दिव्य प्रकट किए (वस्त्र, पुष्प, सुगंधित जल

वर्षा, दुंदुभी नाद)। इस तरह श्रेयांस कुमार ने सच्ची और समयोचित मदद करके अक्षय पुण्य का उपार्जन किया।

****सीख:**** बिना स्वार्थ के, विवेकपूर्वक और सही समय पर की गई मदद ही सच्ची सेवा और महान दान है। पात्र को पहचानकर, विधिपूर्वक दान देना अत्यंत पुण्यदायी होता है।

अध्याय 9: कविता: सीखें आदिनाथ से

आदिनाथ भगवान हमारे, पहले तीर्थकर प्यारे।
नाभिराय-मरुदेवी के, राजदुलारे, नयन सितारे॥

जब जग भूला जीवन राह, कल्पवृक्ष की छोड़ी छाँह।
तब प्रभु ने करुणा की, जीने की कला सिखाई॥

जग को जीना सिखलाया, कर्मयुग का पाठ पढ़ाया।
खेती, अक्षर, शिल्प, कला का, सुंदर ज्ञान हमें दिलवाया॥

अहिंसा का धर मन में ध्यान, सत्य वचन की रखो पहचान।
चोरी पाप, न करना भाई, ब्रह्मचर्य में है अच्छाई॥

चीजों से मत करना प्यार, यही अपरिग्रह का है सार।
उनकी शिक्षा मानें हम, दूर रहेंगे सारे गम, बनेंगे उत्तम॥

अध्याय 10: कविता: आदिनाथ भगवान

अयोध्या के राजा थे, जग के पालनहार।
मरुदेवी माँ के नंदन, नाभि पिता आधार॥

नीलांजना को देख हुआ, क्षणभंगुर जग का ज्ञान।
मन में जागा वैराग्य, छोड़ा राज सम्मान॥

छोड़ दिया सब राजपाट, बन गए वो अनगार।
एक हजार वर्ष तप करके, पाया केवलज्ञान अपार॥

चार सौ दिन बिना आहार, तपस्या कीनी घोर।
श्रेयांस ने रस पिलाया, तब हुआ भोर॥

चार संघ की स्थापना की, दिया धर्म उपदेश।
समवशरण में वाणी खिरी, मिटे जगत के क्लेश॥

कैलाश पर्वत से पाया, मुक्ति का परम प्रदेश।
जन्म-मरण दुःख दूर किया, रहे न कर्म अवशेष॥

वृषभ (बैल) जिनका चिन्ह है, आदिनाथ प्रभु नाम।
हम सब बच्चे श्रद्धा से, करते कोटि प्रणाम॥

अध्याय 11: भगवान आदिनाथ के पूर्व भव: तीर्थकर बनने की यात्रा

प्यारे बच्चों, क्या आप जानते हैं कि भगवान आदिनाथ हमेशा से भगवान नहीं थे? वे हमारी और आपकी तरह ही एक आत्मा थे, जो जन्म-मरण के चक्र में घूम रहे थे। लेकिन उन्होंने कई जन्मों तक अच्छे कर्म किए, तपस्या की और अपनी आत्मा को शुद्ध किया, तब जाकर वे तीर्थकर बने। तीर्थकर बनना कोई एक जन्म का काम नहीं, यह कई जन्मों की साधना का फल होता है। आइए, भगवान आदिनाथ की इस अद्भुत यात्रा के कुछ खास पड़ावों (पूर्व भवों) के बारे में जानें:

1. **भव 1: धन सार्थवाह (व्यापारी):** बहुत समय पहले, वे धन नाम के एक दयालु व्यापारी थे। एक बार यात्रा के दौरान उनकी भेंट कुछ जैन मुनियों से हुई। उन्होंने देखा कि मुनि कितने शांत और सहनशील हैं। उन्होंने भक्तिपूर्वक मुनियों को घी का दान दिया। इस शुद्ध भाव और दान से उन्हें पहली बार **सम्यग्दर्शन (सच्ची श्रद्धा)** की प्राप्ति हुई। यहीं से उनकी मोक्ष यात्रा की शुरुआत हुई।



2. **भव 2: देव (पहले देवलोक में):** धन सार्थवाह का जीव पुण्य कर्मों के प्रभाव से मृत्यु के बाद पहले स्वर्ग, यानी सौधर्म देवलोक में देव बना। वहाँ उन्होंने दिव्य सुख भोगे।

3. ****भव 3: महाबल (राजकुमार/राजा):**** देवलोक का जीवन पूरा करके वे महाविदेह क्षेत्र में राजा शितिकंठ के पुत्र महाबल के रूप में जन्मे। इस भव में उन्होंने राजपाट संभाला, लेकिन उनके मन में आत्म-कल्याण की भावना प्रबल थी। उन्होंने अपने मंत्रियों से धर्म चर्चा की और अंत में अपने पुत्र को राज्य सौंपकर जैन दीक्षा ले ली।

4. ****भव 4: ललितांग देव (पाँचवें देवलोक में):**** महाबल मुनि का जीव तपस्या के प्रभाव से पाँचवें देवलोक में ललितांग नाम का देव बना। वहाँ भी उन्होंने धर्म ध्यान जारी रखा।

5. ****भव 5: राजा वज्रजंघः**** देवलोक से च्यवकर (जन्म लेकर) वे पूर्व विदेह क्षेत्र में राजा वज्रजंघ के रूप में जन्मे। उनकी रानी का नाम श्रीमती था। इस भव में उन्होंने साधुओं की बहुत सेवा की और धर्म के प्रति गहरी आस्था रखी। उन्होंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर कई धार्मिक कार्य किए।

6. ****भव 6: युगलिया (उत्तरकुरु में):**** पुण्य के प्रभाव से वे भोगभूमि उत्तरकुरु में युगलिया (जोड़े के रूप में जन्म लेने वाले) बने। यहाँ बिना किसी मेहनत के कल्पवृक्षों से जीवन की सभी जरूरतें पूरी हो जाती थीं, लेकिन धर्म साधना का अवसर कम था।

7. ****भव 7: जीवानंद वैद्यः**** भोगभूमि से निकलकर वे वैद्य (डॉक्टर) जीवानंद के रूप में जन्मे। वे बहुत गुणी और दयालु वैद्य थे और बिना किसी भेदभाव के सबकी चिकित्सा करते थे। उन्होंने कई लोगों को स्वस्थ किया और बहुत पुण्य कमाया।

8. ****भव 8: देव (दसवें देवलोक में):**** वैद्य जीवानंद का जीव पुण्य कर्मों से दसवें स्वर्ग, यानी अच्युत देवलोक में देव बना।

9. ****भव 9: वज्रनाभ (चक्रवर्ती पुत्र/राजा):**** देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर वे महाविदेह क्षेत्र में चक्रवर्ती वज्रसेन के पुत्र राजकुमार वज्रनाभ के रूप में जन्मे। वे स्वयं भी बाद में चक्रवर्ती राजा बने। इस भव में उन्होंने राजपाट का सुख भोगा, पर उनका मन वैराग्य में रमा रहा। उन्होंने अपने पिता और अन्य मुनियों से धर्म सुना और अंततः अपने पुत्र को राज्य देकर दीक्षा ले ली। ****इसी भव में उन्होंने कठोर तपस्या करके 'तीर्थकर नाम कर्म' का बंध किया****, जिससे यह निश्चित हो गया कि वे भविष्य में तीर्थकर बनेंगे।

10. ****भव 10: देव (सर्वार्थसिद्धि विमान में):**** तीर्थकर नाम कर्म बांधने के बाद वज्रनाभ मुनि का जीव मृत्यु पाकर सबसे ऊँचे स्वर्ग, 'सर्वार्थसिद्धि महाविमान' में अहमिंद्र देव बना। यहाँ जन्म-मृत्यु का दुःख नहीं होता और यहाँ से जीव सीधा मनुष्य भव लेकर मोक्ष प्राप्त करता है।

11. ****भव 11: भगवान ऋषभदेवः**** सर्वार्थसिद्धि से च्यवकर वे अंतिम भव में हमारे प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव के रूप में अयोध्या में जन्मे, जिनकी कहानी हमने अध्याय 1 में पढ़ी।

इस तरह, कई जन्मों की कठिन साधना, तपस्या, दान, सेवा और शुद्ध भावनाओं के बाद वे भगवान आदिनाथ बने और हमें मोक्ष का मार्ग दिखाया। उनकी यह यात्रा हमें सिखाती है कि अच्छे कर्मों और सच्ची लगन से कोई भी आत्मा परमात्मा बन सकती है।
